पद ११८

(राग: पिलु - ताल: दादरा)

कोदंडधारी राम सखे मज पहावा वाटे।।ध्रु.।। नेत्रीं वाहे प्रेमांबुधारा। सद्गदित कंठ दाटे।।१।। लागोनि ध्यास पडली मज। भ्रांति रात्रंदिन वाटे।।२।। माणिक म्हणे रघुवीर दर्शनाविण। कैसी भ्रांती तुटे।।३।।